हिन्दी

(www.tiwariacademy.com)

¼Liश½¼ikB 1½¼रामविलास शर्मा & /kwy½

¼d{kk 9½

प्रश्न अभ्यास

[k.M & d

Ikश्न 1½

धूले के बिना शिशु की कल्पना क्यों नहीं की जा सकती ?

mRrj 1½

शिशु अपनी माँ के लिए के लिए हीरे से भी ज्यादा कीमती होता है । वह जैसा भी है मां की आंखों का तारा है हीरा है और जब वह धूल में सना हो तो और भी सुन्दर लगता है, जैसे मानों प्रकृति ने उसका ऋंगार स्वयं ही कर दिया हो उस समय उसकी चमक हीरे की चमक को भी फीका कर देती है । इसलिए धूल के बिना किसी शिशु की कल्पना भी नहीं की जा सकती ।

Ikश्न 2½

हमारी सभ्यता धूल से क्यों बचना चाहती है ?

mRrj 2½

हमारी सभ्यता बनावटीपन में ज्यादा विश्वास रखने लगी है वह अपने बच्चे को धूल से इसलिए बचाकर रखना चाहती है क्याकि उसका बच्चा यदि धूल में खेलेगा तो बीमार पड़ जाएगा उसके कपड़े गंदे हो जाएंगे ।

प्रश्न 3½

अखाड़े की मिट्टी की क्या विशेषता होती है ?

mRrj 3½

अखाड़े की मिट्टी कोई साधारण धूल नहीं होती वह तेल और मट्ठे से शुद्ध की गई किसी भी पहलवान के लिए मंदिर के चंदन के समान शरीर को शीतलता प्रदान करने वाली तथा मजबूत करने वाली होती है ।

प्रश्न 4½

श्रद्धा , भक्ति ,स्नेह की व्यंजना के लिए धूल सर्वोत्तम साधन किस प्रकार है ?

mRrj 4½

श्रद्धा , भक्ति ,स्नेह ऐसे गुण हैं जो किसी भी व्यक्ति के लिए उसके प्रति प्रेम को दर्शाने वाले हैं । सती उसे माथे से लगाकर तृप्त होती है योद्धा उसे चूमकर मातृभूमि के प्रति अपने कर्तव्य के लिए प्रेरित होता है और पहलवान उसमें लोटकर अपने शरीर को पुष्ट करता है इसीलिए धूल को सर्वोत्तम साधन माना गया है ।

प्रश्न 5½

इस पाठ में लेखक ने नगरीय सभ्यता पर क्या व्यंग्य किया है ?

mRrj 5½

इस पाठ के द्वारा लेखक ने नगरीय सभ्यता के बनावटीपन के प्रति गहरे प्रेम पर व्यंग्य किया है । उसके अनुसार नगर के लोग चमकती और साफ–सुथरी दिखने वाली वस्तु की ओर ही आकर्षित होते है। फिर चाहे उसमें कितनी ही खराबियां क्यों न हों पर देखने में तो सुंदर होनी चाहिए।

[kaM & [k

प्रश्न 1%
लेखक बालकृष्ण के मुँह पर छाई गोधूली को श्रेष्ठ क्यों मानता है ?
mRrj 1%
लेखक धूल में सने हुए शिशु को सर्वश्रेष्ठ मानता है जैसे हीरे की कीमत उसकी सफाई और चमक से लगाई जाती है परन्तु वह बनावटी होती है। परन्तु एक शिशु की वास्तविक सुन्दरता उसका मिट्टी में सना शरीर ही दिखा सकता है परन्तु शहरी लोग इस सुन्दरता को मोल व महत्व नहीं पहचानते हैं। उनके अनुसार उनका शिशु मिट्टी में खेलेगा तों गंदा हो जाएगा और उसका स्वास्थ्य खराब हो जाएगा वास्तव में वे असली सुंदरता से अनजान दिखावटी सुंदरता को ही श्रेष्ठ मानते हैं परन्तु लेखक वास्तविक सुंदरता को पहचानने वाला है ,इसीलिए वह मुँह पर छाई गोधूली को ही श्रेष्ठ मानता है।

प्रश्न 2%
लेखक ने धूल और मिट्टी में क्या अंतर बताया है ?
mRrj 2%
लेखक के अनुसार धूल और मिट्टी में ऐसा अंतर है जों दिखाई नहीं देता पर अपना प्रभाव अवश्य छोड़ता है । दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं। जैसे चाँद और चाँदनी शब्द और रस देह और प्राण जैसे इन दोनों को अलग नहीं किया जा सकता केवल महसूस किया जा सकता है , वैसे ही मिट्टी की चमक उसकी धूल है और धूल से ही मिट्टी की पहचान संभव है ।

प्रश्न 3%
ग्रामीण परिवेश में प्रकृति धूल के कौन – कौन से सुन्दर चित्र प्रस्तुत करती है ?
mRrj 3%
ग्रामीण परिवेश में प्रकृति के निम्न चित्र देखने को मिलते हैं

- अमराइयों पर छाई धूल सूर्योदय की किरणों को सुंदर बनाती है ।
- गोधूली बेला में रुई के बादल की तरह सुंदर प्रतीत होती है ।
- चाँदनी रात में गाड़ियों के पीछे उड़ती धूल ऐसी लगती है मानो कवि की कल्पना उड़ान भर रही हो।
- शिशु के मुख पर ऐसी प्रतीत होती है जैसे फूलों पर पड़कर उसकी सुंदरता को बढ़ा रही हो।

प्रश्न 4%
'हीरा वही घन चोट न टूटे ' का संदर्भ पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।
mRrj 4%
दुनिया की सबसे कठोर वस्तु हीरा है जो हथौड़े की मार से भी नहीं टूटता है , पर उसकी चमक मंत्र मुग्ध कर देती हे इसी भ्रम में कुछ लोग काँच की चमक को देखकर उसको ही हीरा मान बैठते हैं पर परीक्षण करने पर हीरे और काँच में फर्क देखा जा सकता है । ठीक वैसे ही दुनिया की जिस चमक पर हम मोहित होते हैं वह मात्र दिखावा है जिसे देखकर हम फूले नहीं समाते और वास्तविक सुन्दरता से अनभिज्ञ रहते हैं पर समय रूपी हथौड़ा हमें काँच और हीरे में फर्क का ज्ञान करा ही देता है ।

प्रश्न 5%

धूल , धूलि , धूली , धूरि और गोधूली की व्यंजनाओं को स्पष्ट कीजिए।

mRrj 5%

धूल , धूलि , धूली , धूरि और गोधूली की व्यंजनाएँ अलग–अलग हैं धूल जीवन का यथार्थ गद्य है , धूलि उसकी कविता है वह छायावाद की तरह रहस्य से भरी हुई है , धूरि लोक संस्कृति का नव–जागरण है , गोधूलि गाँव की यथार्थ वास्तविकता है । इस प्रकार ये सभी अलग–अलग होते हुए भी अपने आप में पूर्ण और एक दूसरे के पूरक हैं।

प्रश्न 6%

धूल पाठ का मूल भाव स्पष्ट कीजिए ।

mRrj 6%

'धूल' पाठ के द्वारा लेखक ने धूल की महिमा और उपयोगिता का बड़ी सुंदरता से वर्णन किया है । इसके द्वारा लेखक ने समाज के निचले स्तर पर वास्तविक जीवन जीने वाले लोगों को महत्व दिया है । जिसका कारण जीवन के प्रति सही द्रष्टिकोण को प्रकाशित करना है । इस पाठ के द्वारा लेखक ने समाज के द्वारा घृणित और निन्दनीय वस्तु के प्रति लोगों को उसकी सुंदरता और महत्व की ओर आकर्षित किया है , और इस बात से परिचित कराया है कि समाज की जिस वस्तु को हम अनदेखा कर देते हैं , वह हमारे लिए कितनी उपयोगी है और हमारा यह सुंदर शरीर उस धूल से से ही बना है ।

प्रश्न 7%

कविता को विडंबना मानते हुए लेखक ने क्या कहा है ।

mRrj 7%

सौंदर्य की रचना करना ही कविता है । कवि के द्वारा गोधूलि बेला वा वर्णन कविता है नगर में रहने वाला व्यक्ति इस गोधूलि की कविता को नहीं समझ सकता क्योंकि उसने गोधूलि देखी ही नहीं इसको केवल गाँव के माहौल में जाकर ही अनुभव किया जा सकता है यही कविता विडंबना है ।

[kaM & x

आशय Li"V dhft,

1-

फूल के ऊपर जो रेणु उसका श्रृंगार करती है , वही धूल शिशु के मुख पर उसकी सहज पार्थिवता को निखार देती है ।

mRrj 1%

फूल स्वयं ही सुंदर होता है पर जब उसके ऊपर धूल अपना श्रंगार कर देती है तो उसकी सुंदरता और बढ़ जाती है ठीक वैसे ही जब कोई बच्चा धूल में सना हुआ खेलता मुस्कुराता हुआ दिखाई देता है तो वह उसकी सहज संदरता होती है । जिसको केवल ग्रामीण परिवेश में रहने वाला व्यक्ति ही जान सकता है ।

2-
'धन्य–धन्य है नर मैले जो करत गात कनिया लगाय धूरि ऐसे लरिकान की ' लेखक इन पंक्तियों के द्वारा क्या कहना चाहता है ?

mRrj 2½
वे व्यक्ति धन्यवाद के पात्र हैं , जो धूल में लिपटे बच्चों को अपनी गोद में लेकर वास्तविक सुंदरता का आनंद ले ले लेते है । कवि के अनुसार ऐसे व्यक्ति घन्यवाद के पात्र हैं जो हीरे के साथ–साथ धूल भरे हीरे के मोल को भी पहचानते हैं ।

3-
मिट्टी और धूल में अंतर है , लेकिन उतना ही जितना शब्द और रस में ,देह और प्राण में ,चाँद और चाँदनी में ।

mRrj 3½
लेखक के अनुसार धूल और मिट्टी में ऐसा अंतर है जों दिखाई नहीं देता पर अपना प्रभाव अवश्य छोड़ता है । दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं। जैसे चाँद और चाँदनी शब्द और रस देह और प्राण जैसे इन दोनों को अलग नहीं किया जा सकता केवल महसूस किया जा सकता है , वैसे ही मिट्टी की चमक उसकी धूल है और धूल से ही मिट्टी की पहचान संभव है ।

4.
हमारी देशभक्ति धूल को माथें से न लगाए तो कम से कम उस पर पैर तो न रखे।

mRrj 4½
आधुनिक युग में देशभक्ति की भावना भी बदल गई है । आज का व्यक्ति धरती माता की धूल को गंदा मानकर उसे माथ से नहीं लगाना चाहता है ऐसे में लेखक उन दिखावटी देश–प्रेमी लोगों से यही कहना चाहता है कि भले ही मिट्टी को माथे से न लगाओ पर उसका अपमान भी मत करो अर्थात् देश के प्रति समर्पित लोगों के प्रति समर्पित रहो ।

5.
वे उलटकर चोट भी करेंगे तब काँच और हीरें का भेद जानना बाकी न रहेगा ।

mRrj 5½
इन पंक्तियों के द्वारा लेखक समाज की वास्तविक और दिखावटी सुंदरता को दिखाना चाहता है उसका कहना है कि जब समाज के ऊपर से दिखावे को आवरण हटता है अर्थात् जब हीरे पर चोट पड़ती है तक हीरे जैसा दिखने वाला काँच हल्की सी चोट से टूट जाता है और हीरा अपनी चमक और मजबूती के साथ चमकता रहता है ।